भट्टारक शुभचन्द्र

जीवन-परिचय : भट्टरक शुभचन्द्र विजयकीर्ति के शिष्य थे। इन्होंने भट्टारक ज्ञानभूषण और विजयकीर्ति इन दोनों से ज्ञानार्जन किया है। संस्कृत, प्राकृत एवं देशी भाषा के साथ-साथ व्याकरण, छन्द, काव्य और न्याय आदि विषयों का पाण्डित्य सहज में ही प्राप्त था। इन्हें त्रिविध विद्याधर और षट् भाषा कवि चक्रवर्ती उपाधियाँ प्राप्त थीं।

इन्होंने अनेक देशों में विहार करते हुए धर्मापदेश दिया। अन्य भट्टारकों के समान इन्होंने भी अनेक मूर्तियाँ प्रतिष्ठित कराई।

भट्टारक शुभचन्द्र की शिष्य परम्परा में सकलभूषण, वर्णी क्षेमचन्द्र, सुमतिकीर्ति और श्रीभूषण आदि के उल्लेख मिलते हैं।

आचार्य शुभचन्द्र का जीवनकाल संवत् 1535-1620 तक आता है।

रचना-परिचय : आचार्य शुभचन्द्र की संस्कृत एवं हिन्दी दोनों ही भाषाओं में लगभग तीस रचनाएँ उपलब्ध हैं—

संस्कृत रचनाएँ :

1. चन्द्रप्रभचरित, 2. करकंडुचरित 3. कार्तिकेयानुप्रेक्षाटीका 4.चन्दनाचरित, 5. जीवन्धरचरित, 6.पांडवपुराण, 7. श्रेणिकचरित, 8. सज्जनचित्तबल्लभ, 9. पार्श्वनाथकाव्यपञ्जिका, 10 प्राकृतलक्षण, 11. अध्यात्मतरंगिणी, 12. अम्बिकाकल्प, 13. अष्टाह्निका कथा 14. कर्मदहनपूजा, 15.चन्दनषष्टीव्रतकथा, 16. गणधरवलयपूजा 17. चारित्रशुद्धिविधान 18. तीसचौबीसीपूजा 19. पञ्चकल्याणकपूजा 20. पल्लवीव्रतोद्यापन 21. तेरहद्वीपपूजा 22. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा 23 सार्द्धद्वयद्वीपपूजा 24.सिद्धचक्रपूजा।

हिन्दी रचनाएँ : 1. महावीरछन्द, 2. विजयकीर्तिछन्द, 3. गुरुछन्द, 4. नेमिनाथछन्द, 5. तत्त्वसारदूहा, 6. क्षेत्रपालगीत, 7. अष्टाह्निकागीत।